

प्रेस विज्ञप्ति

## पद्म भूषण प्रो. कपिल कपूर ने 'व्हाट इज इंडियन नॉलेज सिस्टम?' पर दिया ज्ञानवर्धक व्याख्यान

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अंग्रेजी विभाग ने 17वें अहमद अली स्मारक व्याख्यान का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जिसमें पद्म भूषण प्रो. कपिल कपूर विशिष्ट वक्ता के रूप में शामिल हुए।

अहमद अली स्मारक व्याख्यान की स्थापना प्रसिद्ध लेखक, शिक्षाविद और प्रगतिशील लेखक आंदोलन के सह-संस्थापक अहमद अली के सम्मान में की गई थी।

प्रो. कपूर ने 'व्हाट इज इंडियन नॉलेज सिस्टम?' विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया, जिसमें भारतीय बौद्धिक परंपराओं की इंटीग्रेटेड और हार्मोनियस प्रकृति पर प्रकाश डाला गया।

अपने संबोधन में प्रो. कपूर ने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय परंपरा एक इंटीग्रेटेड परंपरा है, जहां सोच प्रणाली भेदभाव पर आधारित नहीं है, बल्कि 'नो अदर आउटसाइड यू' की अवधारणा को अपनाती है। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे भारतीय थॉट सिस्टम मतभेद के बजाय सद्भाव पर आधारित हैं, उन्होंने एक ऐसे दृष्टिकोण की वकालत की जो बौद्धिक विमर्श में समावेशिता और एकता को बढ़ावा देता है।

उनके व्याख्यान का मुख्य आकर्षण यह दावा था कि ज्ञान की प्रत्येक वस्तु अंतहीन जांच के लिए उत्तरदायी है, जो भारतीय परंपराओं में बौद्धिक अन्वेषण की असीम प्रकृति को पुष्ट करता है। उन्होंने आगे टिप्पणी की कि विचार धर्म, रंग और जाति की सीमाओं को पार करते हैं, उन्होंने जोर देकर कहा कि बौद्धिक परंपराओं को सभी के लिए खुला और समावेशी रहना चाहिए।

प्रो. कपूर ने भरत मुनि के नाट्य शास्त्र, पाणिनि के अष्टाध्यायी- जिसे प्राकृतिक मानव भाषा के एकमात्र व्यापक और संपूर्ण एल्गोरिथम व्याकरण के रूप में मान्यता प्राप्त है, भर्तृहरि के वाक्यपदीय और पतंजलि के योग सूत्र का हवाला देते हुए भारतीय बौद्धिक परंपरा के मौलिक ग्रंथों में भी गहराई से गोता लगाया। योग पर चर्चा करते हुए, उन्होंने इसके दोहरे लक्ष्य पर प्रकाश डाला: मन को गति प्राप्त करने में सक्षम बनाना और किसी चीज़ को सीधे अनुभव किए बिना अनुभव करने की क्षमता विकसित करना।

व्याख्यान ने समृद्ध और विस्तृत भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक विचारोत्तेजक खोज दृष्टि प्रदान की, जिससे छात्रों और शिक्षकों को भारत की दार्शनिक और बौद्धिक विरासत की एक नई समझ मिली।

इससे पहले विभागाध्यक्ष प्रो. मुकेश रंजन ने विभाग, संकाय, छात्रों और पूरे जामिया मिल्लिया इस्लामिया समुदाय की ओर से प्रो. कपिल कपूर का स्वागत किया और विश्वविद्यालय को अपनी उपस्थिति से सम्मानित करने के लिए उनका हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रो. कपूर की उपस्थिति ने विभिन्न विषयों और संस्कृतियों को गहन चर्चाओं में शामिल होने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने आगे कहा कि भाषा विज्ञान, साहित्यिक सिद्धांत और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के क्षेत्र में प्रो. कपूर का योगदान अनुकरणीय रहा है और भाषा, संस्कृति और दर्शन के प्रतिच्छेदन में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि छात्रों और विद्वानों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। इस अवसर पर बोलते हुए

मानविकी और भाषा संकाय के डीन प्रो. इक्तेदार मोहम्मद खान ने भारत की समन्वयकारी संस्कृति की ताकत पर प्रकाश डाला और भारतीय परंपरा और संस्कृति की मजबूती को प्रमाणित करने वाली उनकी गहरी और विद्वत्तापूर्ण अंतर्दृष्टि के लिए प्रो. कपूर का हार्दिक धन्यवाद किया। एमए सेमेस्टर IV की छात्रा सुश्री अभिलाषा भट्टाचार्य ने प्रोफेसर कपूर के गहन विचारों के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया का अंग्रेजी विभाग ऐसे व्याख्यानोँ और अकादमिक कार्यक्रमों के माध्यम से विविध बौद्धिक परंपराओं पर चर्चा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

जनसंपर्क कार्यालय  
जामिया मिल्लिया इस्लामिया